कबीरदास — क्रमशः

B.A. + B.Sc. हिन्दी रचना

क्रमशः — (2)

स्त्री का नाम लोई, पुत्र का नाम कमाल तथा पुत्री का नाम कमाली है। ये रामानन्द के शिष्य थे।

कबीरदास बहुश्रुत थे। ये संतों में उठकर जो काव्य रचना किया करते थे या भक्तिपूर्वक पद गाया करते थे उसे लिपिबद्ध करने का कार्य इनके प्रधान शिष्य धर्मदास ने किया। इस लिपिबद्ध पुस्तक का नाम बीजक पड़ा। इसके तीन भाग हैं — साखी, सबद और रमैनी।

कबीर का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जब समाज विशृंखलित हो चुका था। [illegible] लोग मानवता [illegible] स्वार्थ लोलुपता [illegible] स्वयं से पीर पैगम्बर बनकर लोगों की आँखों में धूल झोंक रहे थे। सामाजिक मूल्य टूट रहे थे, देश, काल और पात्र के अनुरूप परिवर्तन को अस्वीकार कर समाज [illegible] रूढ़ियों-परम्पराओं पर चल पड़ा [illegible] हो गया था, जहाँ से उचित मार्ग पर अग्रसर होना उसके लिए कठिन हो गया था। दो भिन्न जातियाँ हिन्दू और मुसलमान अपने-अपने [illegible] नहीं कर पा [illegible] में अपने को व्यवस्थित [illegible] जातियों में [illegible] रही थी, कबीर ने दोनों जातियों की [illegible] प्रहार किया। कुरीतियों पर जोरदार शब्दों में प्रहार करते हुए एक ओर हिन्दुओं की मूर्ति पूजा पर प्रहार करते हुए ये कहते हैं —

पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहार।
ताते यह चाकी भली पीस खाय संसार।।

तो दूसरी ओर इस्लाम धर्म की कुरीतियों पर भी वे धधकते हुए अंगारे इन शब्दों में रख देते हैं —

काँकर-पाथर जोरि कै मस्जिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे क्या बहिरा हुआ खुदाय।।

इसी तरह ब्राह्मणों और तुर्कों के कुलाभिमान और अहंमन्यता पर भी वे चटकती हुई चिनगारी रख देते हैं —

जो तू बाभन बाभनी जाया और राह ते काहे न आया।
जो तू तुरक तुरकिनी जाया पेटे काहे न सुन्नत कराया।।

जातिगत संकीर्णता पर उनकी स्पष्ट दृष्टि रही कि —

.. संतों जात न पूछो निरगुनियाँ।

वे सकल जातियों में कोई अंतर न मानकर सकल को एक ही की उपज मानते हैं।

क्रमशः